Notification no:- 577/2025

(Notification Date:- 7/4/2025)

Name of Scholar: NEHA AFREEN

Name of Supervisor: PROF. AJAY KUMAR NAURIYA

TOPIC: NAV-UDARVAD KE PARIPREKSHYA MEIN HINDI KATHA-SAHIIYA KA AALOCHANATMAK ADHYAYAN (VISHESH SANDARBH 2000 SE ADYATAN)

DEPARTMENT: HINDI

संक्षिप्त शोध सार (Findings)

बीज शब्द:- नव उदारवाद, उदारवाद, निजीकरण, भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद

सन् 1991 के बाद आई 'नई आर्थिक नीति' यानी नव उदारवाद से साहित्य भी अछूता नहीं रहा। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण समाज में आए परिवर्तनों को साहित्यकारों ने पहचाना और उन्होंने इन समस्याओं पर साहित्य लिखना आरम्भ किया। उदारवाद, बाज़ारवाद, पूँजीवाद और निजीकरण के बलबूते नव उदारवाद अपनी पैठ मनुष्य के भीतर बनाता जा रहा है जिससे समाज में तेजी से परिवर्तन हो रहे है। इसने समाज में नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच एक गहरी खाई को जन्म दे दिया है। भले ही वैचारिक स्तर पर हम पूँजीवाद और बाजारवाद का घोर विरोध करते हैं किंतु मजबूरी यह है कि हमें इन्हीं चीजों की बदौलत विभिन्न सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होती है। वैसे तो नव उदारवाद में हर चीज शामिल है लेकिन बारीकी से देखने पर पता लगता है कि इसमें आम आदमी और उसकी जरूरतें ही गायब हैं। इसमें आम व्यक्ति के जीवन की समस्याएं केंद्र में नहीं हैं और उसकी नैतिकता आदि का अभाव मिलता है। गरीब, बेरोजगार वर्ग के लोग आज भी जीवन की

मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित हैं। जहाँ पर भी नव उदारवाद की पैठ है, उसका वर्चस्व कायम है, वहाँ पर विपन्नता की खाई देखी जा सकती है। आज ज्ञान की जगह उपभोग बाजार का नया औजार बन गया है और व्यक्ति सब कुछ पा लेने की दौड़ में अपनी पहचान को भूलता जा रहा है।

इस नव उदारवाद ने देश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का भरमार लगा दिया है जिसके कारण बाज़ारवादी उपभोक्तावादी संस्कृति ने जन्म लिया और इसने व्यक्ति के जीवन में नकली जरूरतों को पैदा कर दिया है। व्यक्ति इसकी चमक दमक के पीछे भाग रहा है और इस दौड़ भरी जिंदगी में भागते-भागते वह खुद को भूल गया है। आज पश्चिमी संस्कृति ने भारत के लोगों को पूरी तरह से प्रभावित किया है। कोई भी पक्ष इससे अछूता नहीं रह गया है। शिक्षा से लेकर समाज तक सभी निजीकरण की चपेट में हैं। भारत सिर्फ एक देश नहीं है बल्कि यह विश्व में अपनी सामाजिकता और संस्कृति के लिए जाना जाता है। लेकिन आज इसपर विदेशी संस्कृति पूरी तरह से हावी होती जा रही है और हमारे मूल्य, धरोहर और संस्कृति एकदम नष्ट होते जा रहे हैं। भारत जो कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' के लिए जाना जाता था, अब बाजारीकारण के लिए जाना जा रहा है। नव उदारवाद के दौर का यह सबसे बड़ा सच है कि आज व्यक्ति की हैसियत शिक्षा, उसकी नैतिकता, मूल्यों आदि से नहीं बल्कि पैसा और सुख-सुविधाएं देखकर तय की जाती है और उससे ही उसकी सामाजिक हैसियत आंकी जाती है।

आज पूँजी और सत्ता के लालच में व्यक्ति ने अपनी आत्मा तक को बेच दिया है और उसके लिए केवल नाम, पैसा, प्रतिष्ठा ही सब कुछ है। समकालीन साहित्यकारों ने समाज के इस यथार्थ को बहुत बारीकी से देखा, समझा और अपने साहित्य में इसे व्यक्त किया है। इस नव उदारीकरण के कारण समाज में उत्पन्न असमानता, शोषण तथा उपभोक्तावादी संस्कृति को उन्होंने अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है।